

चित्र अनुराग को एक तक देखते हुए फिर उससे पूछ पड़ती है यक्षिणी ने रंजन को श्राप दिया था पर क्यों अनुराग चित्र को घूरते हुए कहता है मैंने तुझे कहा ना चित्र में अनुराग नहीं हूँ जो तेरे हर सवाल का जवाब दो मैं तुझे वही बताऊंगा जो मैं तुझे बताना जरूरी समझता पर रही बात रंजन को यक्षिणी ने श्राप क्यों दिया क्यों उसकी शक्ति से मिलेगी तब खुद से पूछ लेना वह तेरे सारे सवालों के जवाब दे दीजिए चित्र बड़ी एकसाइटमेंट के साथ अनुराग की तरफ देखने लग जाती है अनुराग चित्र से कहता है मिलना चाहती है तो यक्षिणी से चित्र चित्र में अपना सिर हिलाते हुए बोल पड़ती है हाँ मैं मिलना चाहती हूँ यक्षिणी से भक्षण मिलना चाहती हूँ अनुराग मुस्कराते हुए कहता है मिल पाऊंगा चित्र जरूर मिल जाऊंगा चित्र का चेहरा उतर जाता है वह मायूस हो जाती है अनुराग जानबूझकर नाटक करते हुए चित्र का मजाक उड़ाते हुए कहता है तू उदास मत सुचित्रा दिल छोटा नहीं करते इतनी सी बात से एक दिन मैं तुझे यक्षिणी से जरूर मिल पाऊंगा ताकि तुझे भी तो पता चले की आखिरी कितनी खूबसूरत है इतनी ज्यादा खूबसूरत की अनुराग तुझे छोड़कर यक्षिणी के पास चला गया है अनुराग यक्षिणी की खूबसूरती के कारण यहां पर नहीं आया था बादशाह की कहानी लिखने के लिए आया था वह कहानी जिसे लिखने को उसने बचपन में यक्षिणी से वादा किया था अगर अनुराग वादा नहीं करता तो कभी यहां पर नहीं आता वह तो तूने अनुराग के शरीर को अपने वश में कर लिया वरना वह तो कब का इलेक्शन की कहानी लिखकर यहां से चला जाता है कहानी खत्म करके अनुराग अपनी पत्नी और के पास वापस आ जाता समझा वाली बात सुनकर फिर अनुराग जोर जोर से हंसना शुरू कर देता है पर इस बार हंसना शुरू करता है तो वह रुकता ही नहीं है हंसती रहता है जैसे चित्र में कोई बहुत बड़ा जोक सुनाएँ हो ऐसी बात कही हो जो हजम करने लायक ही ना हो अनुराग चित्र की आंखों में देखते हुए कुछ सीरियस होते हुए कहता है अनुराग कभी यहां से नहीं जाता चित्र की कहानी पूरी हो जाती तब भी नहीं तू ही बता अगर अनुराग को यह गांव छोड़कर जाना ही होता तो वह यक्षिणी के साथ अमावस्या की रात क्यों करता जिस रात को पहली बार उससे मिला था अनुराग से तूने मेरे किया था तुझे नहीं पता क्या क्या बीजा किया था अनुरागिनी यक्षिणी के साथ और क्यों अनुराग चालाकी के साथ चित्र से कहता है तेरे इस सवाल का जवाब भी मैं तुझे नहीं दूंगा खुद यक्षिणी देखती तुझे जब दुनिया से मिलेगी इतना क्या कर अनुराग फिर हंसने लग जाता है चित्र जानती थी कि अनुराग से अगर वह कुछ पूछेगी तो भी वह कुछ नहीं बताने वाला था उल्टा अगर उसका गुस्सा बूढ़ गया तो अनुराग जो बता रहा था वह भी नहीं बताया कुछ नहीं रहती है चुप ही खड़ी रहती है अपनी सारी सवालों को अपने मां के अंदर ही चुप्पी के साथ रख लेती है जाने के बाद मुझे लगीं रहा था कि अब हो ना हो तो जरूर पणजी जाएगी अनुराग कैसे बदला यह पूरी कहानी पंचम गांव से जुड़ी हुई है और जैसा मैंने सोचा तू शाम होते पंचम गांव जाने के लिए निकल गई जिस वक्त तूने मेरे कमरे में बाहर खड़े होकर छट्का था ना उसे वक्त में सो नहीं रहा था चित्र बल्कि सोने का नाटक कर रहा था वही नाटक जो कभी तू मेरे साथ खेलते हुए आई है और कभी मैं तेरे साथ चित्र एक बड़ी ही गहरी चुप्पी के साथ अनुराग की सारी बातें सुनते जा रही थी उसके समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वह अनुराग के बने हुए चक्रव्यूह में कैसे फंस गई थी अनुराग एक लांबिया भरने के बाद फिर बोल पड़ता है मुझे पता था बस तेरे पंचम गांव जाने की देर है डायन वंश का हीरा डायन को अपनी तरफ आकर्षित करता है डायन को पुकारता है उसे आवाज लगता है रानी के साथ घूमने चित्र मनी मन सोचने लग जाती है इसे कैसे पता कि मेरे अंदर मां डायन बनने के गुण है कहीं इसी वजह से तो यह मुझे यहां पर नहीं रोकना चाहता है चित्र इस बारे में सोच रही थी कि तभी अनुराग फिर से बोल पड़ता है हीरे का डायन वंशी रक्षा कवच टूटने के बाद आया मेरे बनाए चक्रव्यूह का सबसे अहम और आखिरी चरण चित्र जब तुझे हीरा मिल गया तो अब मुझे तुझे वह हीरा लेना था वह भी तेरी मर्जी के साथ मैं तुझको अनुराग अपने हाथ में हीरे को उछाल ते हुए चित्र को वह हीरा दिखाते हुए कहता है और देख तूने यही रह हंसते हंसते मुझे दे दिया बड़ी खुशी खुशी मेरे साथ विशाखा कर लिया चित्र आयुषी के साथ वहां पर खड़ी हुई थी पर अभी भी उसके मन में कई सारे सवाल थे जो गुंज रहे थे चित्र उदासी भरे अनुराग से फिर पूछ पड़ती है अब इतना सब बताई दिया है तो फिर यह भी बात ही दो कि यह सब बातें तो मुझे क्यों बता रहा है क्या यह भी तेरे चक्रव्यूह का हिस्सा है या फिर कोई नया चक्रव्यूह रचना है मेरे साथ बातें कितनी बड़ी बेवकूफ है डायन होकर भी कितनी आसानी से तू मेरे चक्रव्यूह में फंस गई तू तो डायन बनने के काबिल ही नहीं है पता नहीं तो जैसी का जन्म डायन वंश में कैसे हो गया कभी-कभी तो मुझे तुझ पर शक होता है कि तू निषाद और दैनिका की बेटी है भी या नहीं लग जाती है उसकी हंसी एक तमाचा थी चित्र के डायन होने पर चित्र आयुषी के साथ वहां पर खड़ी रहती है और रोटी रहती है क्योंकि वह जानती थी कि उसने अनुराग के साथ वह भी सह कर लिया था जिससे वह बदल नहीं सकती थी तरफ चित्र अपनी हार का मातम मना रहे थे नजर आने लग जाता है यह दृश्य देखकर युग की आंखें भी पूरी तरह नाम हो गई थी वह भी रोने लग गया था युग मन में रोते हुए खुद से कहता है इसका मतलब यह हुआ की मां ने मुझे पापा से दूर नहीं किया था बल्कि पापा ने मुझे मां से दूर किया था मैंने तो मेरी जान बचाने के लिए अपना सब कुछ कर्बान कर दिया मैं हमेशा मां को बुरा भला क्या तेरा बल्कि मां तूम मुझसे बहुत प्यार करती थी इतना प्यार कितना है मुझे समझ नहीं आ रहा था मैं क्या करूं तूम ही बताओ मैं कैसे तुम्हें अपनी आंखों के सामने मारता हुआ देख सकती थी आखिर एक मां की जान उसकी औलाद में ही तो बस्ती है अगर औलाद ही नहीं रहेगी तो उसके बिना मर्जी कर क्या करेगी इसलिए मुझे अनुराग के साथ विवाह करना पड़ा विवाह करने के बाद जैसा कि हमारे बीच तय हुआ था मैंने अगले दिन तुम्हारी स्कूल से तुम्हारी टच निकाल ली थी और तुम्हें बंगलुरु के बोर्डिंग स्कूल भेजने की सारी तैयारी कर ली थी मुझे ऐसा लग रहा था जैसे अनुराग फिर कोई चक्रव्यूह रचना की तैयारी कर रहा था क्योंकि जैसा वह बोल रहा था मैं वैसा ही कर रही थी पर मैं सोच लिया था कि मैं अब उसके किसी भी बनाए थे शुरू कर दिया एक ऐसा चित्र के बने हुए चक्रव्यूह के बारे में जानने के लिए अनुराग को हर हीरा मिल गया था तो क्या हुआ पर उसे जरा सी भी भटक नहीं थी की यक्षिणी के ताजमहल का लाल हीरा मेरे पास था जो उसे दिन मैंने टाइपराइटर के अंदर से निकाल लिया था अनुराग को इस बात की भनक भी कैसे होती वह तो हर हीरे को पकड़ जीत का जश्न बना रहा था हर हीरे से मिलने वाली शक्तियों को लेकर खुश था मुझे अच्छे से याद था कि जिस वक्त मैं कुएं में गिरी थी उसी के साथ वह लाल हीरा भी मेरी साड़ी के पल्लू के फटने के कारण मेरे साथ किया था चित्र एक लंबी आप भरने के साथ फिर बोल पड़ती है मैं रात में उसको के पास गई और उसके अंदर कूद गई वह सीरियल मैं भी मेरा साथ देना शुरू कर दिया था मेरी किस्मत इतनी अच्छी थी पल्लू में बंद हुआ हमेशा हमेशा के लिए भाग बचा लिया था उसे तुम्हें छूने तक से रोक दिया था पर मुझे डर था कि अगर भविष्य में कभी यक्षिणी आजाद हो गई और उसने अपने अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए तुम्हें मार दिया तो आखिर तूम भी तो भगवान के वंशज थे ना तुम्हें मार कर उसे आसानी से अपने अभिशाप से मुक्ति मिल सकती थी इसलिए मैं कैसे भी करके उसे लाल हीरे को तुम्हारे पास रखना चाहती थी क्योंकि मैं अनुराग की कहानी में ही पड़ा था कि जिसके पास यक्षिणी के तक का हीरा होता है उसका यक्षिणी कुछ नहीं कर सकती है उसे यक्षिणी छूट तक नहीं सकती है इसलिए मैं सोने लगी कि आखिर मैं कैसे उसे लाल हीरे को हमेशा तुम्हारे पास रखो और किसी को पता भी ना चले जाता है बहुत सोचने के बाद मैं छुपा देना चाहिए कोई ना कोई ताबीज पहनती है और मैं भी एक बेटा तुम्हारे लिए वह ताबीज बनाया जो तुम्हारी यक्षिणी से रक्षा करता एक कलाकार तुम्हें थी और एक कलाकार कुछ भी कर सकता है मैंने रात ही रात में उसे लाल हीरे को एक लॉकेट के अंदर छुपा दिया और अगले दिन जो अनुराग तुम्हें बोर्डिंग स्कूल छोड़ने जा रहा था तो मैं तुम्हें वह

लॉकेट पहना दिया और अनुराग को पता भी नहीं चला अनुराग सिर्फ तुम्हें बेंगलुरु छोड़ने नहीं जा रहा था बल्कि तुम्हारे साथ साथ लाल हीरे को भी बेंगलुरु छोड़कर आ रहा था इंतजार कर रही थी कि बस एक बार अनुराग तुम्हें सही सलामत बेंगलुरु छोड़ कर वापस आ जाए टाइपराइटर में नहीं है वह तुम्हारे पास कुछ नहीं कर पाए जो बचपन में बोर्डिंग स्कूल में पढ़ चुका था जो उसने लिखी थी चित्र फिर कहती है जो बेटा अनुराग की तुम्हें लेकर ग्रेवार्ड कोठी से निकलने के साथ ही मेरे चक्रव्यूह का बनाया हुआ पहले चरण शुरू हो चुका था जिसमें अनुराग फस चुका था वह तुम्हें बेंगलुरु छोड़ने जाने के लिए गांव से निकल चुका था और अब चक्रव्यूह के दूसरे चरण को कार्य कर साबित करने की बारी मेरी थी पुरानी